झारखंड निर्माण आंदोलन

- झारखंड की राजव्यवस्था को समझने से पहले झारखंड राज्य निर्माण आंदोलन को समझना होगा क्योंकि कई राजनीतिक संगठनो के प्रयास से झारखंड को एक अलग राज्य का दर्जा मिला ।
- 1912 ई. से पहले झारखंड सयुंक्त बंगाल प्रांत का हिस्सा था जिसमें बिहार और उड़िसा भी शामिल थे ।
- सन् 1912 ई. को संयुक्त बंगाल प्रांत से अलग करके बिहार राज्य का गठन किया गया , तत्पश्चात 1936 ई. मे बिहार के क्षेत्र से उड़िसा को अलग किया गया ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

झारखंड निर्माण आंदोलन (1912 से 2000 ई.)

- झारखंड राज्य निर्माण आंदोलन सबसे लंबे समय तक चलने वाला राज्य निर्माण आंदोलन माना जाता है क्योंकि इसकी शुरूआत 1912 से ही आरंभ हो गइ थी और लगातार इसके लिए प्रयास चलता रहा और अंततः झारखंड राज्य का निर्माण हुआ ।
- **J BARTHOLOMAN** को झारखंड आंदोलन का जनक कहा जाता है वे ढाका विधार्थी परिषद में रांची के एंगलिकन मिशन की ओर से भाग लेने गए हुए थे ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

झारखंड निर्माण आंदोलन से जुड़े महत्वपूर्ण राजनीतिक संगठन

1. क्रिस्चियन स्टूडेंट ऑर्गेनाइजेशन (1912

- **J BARTHOLOMAN** ने 1912 ई. में इस संगठन की स्थापना की । वे चाईबासा के रहने वाले थे ।
- बी ए पास करने के दौरान वे संत पॉल विद्यालय के शिक्षक बने
- 1915 में नए लोगें ने **J BARTHOLOMAN** को संगठन से बाहर कर दिया और संगठन का नाम बदलकर के छोटानागपूर उन्नति समाज कर दिया ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2. छोटानागपुर उन्नति समाज (1915)

- एलिंगकन मिशन के बिशप केनेडी के सुझाव पर इस संगठन का नाम पड़ा था ।
- इस संगठन के प्रमुख नेता जुएल लकड़ा , बांदी राम उरांव , ठेबले उरांव एवं पॉल दयाल थे ।
- इस संगठन का उदेश्य छोटनागपुर की प्रगति व आदिवासी जन समुदाय में सामाजिक आर्थिक और राजनीकि सुधार करना था ।
- छोटानागपुर उन्नति समाज ने ही सबसे पहले आदिवासी अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए आवाज उठाई ।
- इसके सदस्य केवल आदिवासी ही हो सकते थे ।
- इस संगठन द्वारा आदिवासियों को विशेष सुविधा देने की मांग को लेकर साइमन कमीशन के समक्ष एक ज्ञापन भी सौंपा गया था जिस पर साइमन कमीशन ने ध्यान नही दिया ।
- छोटानागपुर उन्नति समाज के मुख्य उदेश्य थे :–

  1. छोटानागपुर की प्रगति
  2. आदिवासी जनसमुदाय मे समाजिक , राजनीतिक और आर्थिक प्रगति

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

3. किसान सभी की स्थापना (1930)

- छोटानागपुर उन्नति समाज के सदस्यों के बीच मतभेद के बाद उसके ही कुछ सदस्यों द्वारा किसान सभा की स्थापना की गई थी।
- प्रथम अध्यक्ष – ठेबले उरांव
- प्रथम सचिव – पॉल दयाल
- शोषित किसानो को जमींदारो के विरूद्ध संगठित करने वाला प्रथम संगठन

4. छोटानागपुर कैथोलिक सभा (1933)

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- बिशप सेबरिन की प्रेरणा से स्थपित संगठन
- इसके प्रथम अध्यक्ष बेनिफेस लकड़ा थे तथा प्रथम महासचिव इग्नेश बेक थे ।

बेनिफेस लकड़ा

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

➢ कैथोलिक जिन्हें अब तक किसी भी संगठन में स्थान नहीं मिला था उनके द्वारा स्थापित किया गया संगठन था ।

5. छोटानागपुर संथाल परगना आदिवासी सभा (1938)

- 31 मई 1938 को रांची के हिंद पीढी मोहल्ले में एक सभा भवन में छोटानगपुर उन्नति समाज की वार्षिक आम सभा हुई इसमें पांच आदिवासी संगठन शामिल हुए जो निम्नलिखित है –
  - छोटानागपुर उन्नति समाज
  - किसान सभा
  - छोटानागपुर कैथोलिक सभा
  - मुंडा सभा
  - हो माल्टो मारंग सभा
- उपरोक्त पांच संगठनो को मिलाकर छोटानागपुर संथाल परगना आदिवासी सभा का गठन किया गया ।
- अध्यक्ष– थियोडोर सुरीन
- उपाध्यक्ष – बांदी राम उरांव
- सचिव– पॉल दयाल

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- इस सभा का उदेश्य छोटानागपुर एवं संथाल परगना को मिलकार एक अलग प्रांत का निर्माण करवाना था ।
- जनवरी 1939 ई. मे छोटानागपुर संथाल परगना आदिवासी सभी का नाम बदलकर आदिवासी महासभा कर दिया गया ।
- कुछ घटनांए जो झारखंड के पांच संगठनों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया

1936 में बिहार , उड़िसा संयुक्त प्रांत से उड़िसा का अलग होना

बिहार में गठित कांग्रेसी मंत्रिमंडल में झारखंडीयों को एक सभी स्थान ना मिलना

CAREER FOUNDATION

झारखंड आंदोलन में जयपाल सिंह मुंडा का प्रवेश (1939)

जुनून राष्ट्र सेवा का

- 1939 में जयपाल सिंह मुंडा का झारखंड आंदोलन में प्रवेश के पश्चात वे आंदोलन के केंद्र बिंदू बन गए ।
- जयपाल सिंह मुंडा जो मूल रूप से छोटानागपुर के थे लेकिन 1938 में बीकानेर रियासत के राजस्व मंत्री थे । 1938 में पटना आने के क्रम में वे रांची मे रूके थे ।
- छोटानागपुर संथाल परगना आदिवासी सभा के नेताओ द्वारा उन्हें वार्षिक सभा में अध्यक्षता करने का आग्रह किया गया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया ।

- 20–21 जनवरी 1939 को रांची के हरमू नदी के किनारे एक सभा भवन मे दूसरी महासभा का अयोजन हुआ इसमें स्वागत समिति के अध्यक्ष सैमूअल पूर्ति थे ।
- आदिवासियों द्वारा जयपाल सिंह का भव्य स्वागत किया गया तथा उन्हें मरंग गोमके (बड़े गुरू जी) कहां गया ।
- इसी दूसरी महासभा में पहली बार अलग राज्य का दर्जा देने की बात कही गई और मांग की गई ।
- 21 जनवरी 1939 को जयपाल सिंह के द्वारा अलग राज्य के लिए प्रस्ताव लाया गया जिसे एन एन रक्षित के द्वारा अनुमोदन किया गया ।
- 8 फरवरी 1940 की श्री कृष्ण सिंह के द्वारा एक भाषण में अलग राज्य के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया ।
- इसके बाद भी महासभा द्वारा लगातार अलग राज्य की मांग जारी रही मगर मांग पूरी नही की गई ।
- जयपाल सिंह मुंडा ने अलग झारखंड राज्य की मांग राष्ट्रीय नेताओं जैसे सुभाष चंद्र बोस गांधीजी वह नेहरू जी के भी समक्ष रखा मगर राष्ट्रीय नेताओं ने जयपाल सिंह को स्वीधनता आंदोलन की ओर ध्यान आकर्षित करने को कहा ।
- मार्च 1941 को रांची में आदिवासी महासभा का चौथा वार्षिक अधिवेशन हुआ जिसमें मुस्लिम लीग के नेताओं को भी आमंत्रित किया गया ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- जयपाल सिंह ने मुस्लिम लीग के नेताओं के साथ सुर में सुर मिला कर कहा कि मुसलमान व आदिवासी देश में कांग्रेस के हिंदू राज को स्वीकार नही करेंगे ।

- **झारखंड पार्टी –**31 दिसंबर 1949 को आदिवासी महासभा का नाम बदलकर झारखंड पार्टी कर दिया गया । जयपाल सिंह को इसका अध्यक्ष बनाया गया ।
- 1 दिसंबर 1950 को एक सम्मेलन में जयपाल सिंह ने यह घोषणा कर दी की पार्टी के द्वार गैर आदिवासियों के लिए खोला जा रहा है और उन्होंने कहा कि अब आदिवासी व गैर आदिवासी दोनों को मिलकर अलग झारखंड प्रशासकीय राज्य की मांग को और शक्ति प्रदान करना है ।
- 1951 में सोशलिस्ट पार्टी के नेता जयप्रकाश नारायण ने अलग झारखंड राज्य का समर्थन किया ।
- 1952 के आम चुनाव में पंडित नेहरू ने झारखंड की यात्रा की मगर उन्होने अपने भाषण में यह कह दिया कि झारखंड फारखंड कुछ नही मिलेगा देश को और टुकड़ों में नही बांटा जाएगा ।
- 1952 के बिहार विधानसभा के चुनाव में झारखंड पार्टी 33 सीट जीतकर मुख्य विपक्षी दल बन गई ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- फिर 1957 के बिहार विधानसभा चुनाव में भी झारखंड पार्टी को 32 सीटे प्राप्त हुई ।
- 1952 तथा 1957 दोनो बार सुशील कुमार बागे को विपक्ष का नेता बनाया गया जो झारखंड पार्टी से थे ।
- 1962 का चुनाव आते–आते झारखंड पार्टी का रूतबा घट गया और सिर्फ 20 सीटें प्राप्त हुई और पार्टी का मुख्य विपक्षी दल का दर्जा भी छीन लिया ।
- 1963 आते–आते झारखंड आंदोलन भी मंद पड़ गया ।
- 20 जून 1963 को झारखंड पार्टी का विलय कांगेस मे हो गया । कुछ लोगों का मानना है कि यह विलय जयपाल सिंह की दूसरी पत्नी जहां आरा के प्रयासों से हुई थी, जो कि इंदिरा गांधी सरकार में परिवहन एवं विमानन विभाग में उप मंत्री भी बनी थी ।
- कुछ लोगो का यह मानना है कि झारखंड पार्टी का कांग्रेस में विलय के पीछे तत्कालीन मुख्यमंत्री विनोदानंद झा का प्रयास था ।
- विलय के पश्चात जयपाल सिंह मुंडा बिहार की विनोदानंद झा की सरकार में समुदायिक विकास विभाग के मंत्री बन गए ।
- 30 मई 1969 को जयपाल सिंह ने झारखंड पार्टी को पुनजीर्वित करने के उदेश्य कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया ।
- 20 मार्च 1970 ई. को नई दिल्ली में प्र मस्तिष्क मे रक्त स्त्राव के कारण जयपाल सिंह मुंडा की मृत्यु हो गई

CAREER FOUNDATION
जनहित राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

➢ संगठन में बिखराव का दौर

➢ 1963 से 1973 तक झारखंड आंदोलन शिथिल बना रहा । झारखंड पार्टी कई टुकड़ो में बट गया जैसे बिरसा सेवादल (1965) ऑल इंडिया झारखंड पार्टी (1967) हुल झारखंड पार्टी (1969)

झारखंड मुक्ति मोर्चा (1973)

➢ स्थापना – 4 फरवरी 1973

➢ स्थान – गोल्फ मैदान धनबाद

➢ संस्थापक अध्यक्ष – विनोद बिहारी महतों

➢ संस्थापक महासचिव – शिबू सोरेन

➢ संस्थापक सदस्य अरूण – शिबू सोरेन

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

- संस्थापक सदस्य अरूण –कुमार राय

- झारखंड मुक्ति मोर्चा की स्थापना से पूर्व में भी उपरोक्त तीनों संस्थापक सदस्यों ने एक एक संगठन स्थापित कर रखे थे ।
  - विनोद बिहारी महतो शिवाजी समाज – 1969
  - शिबू सोरेन – सोनोत संथाल समाज – 1970
  - अरूण कुमार राय – मार्क्सवादी समन्वय समिति – 1971

वनांचल की मांग

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

- 14 जनवरी 1984 ई. को पलामू के बेतला नेशनल पार्क मे छोटा नागपुर के भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने इंदर सिंह नामधारी की अध्यक्षता में वनांचल नाम से नया राज्य बनाने की मांग करते हुए एक प्रस्ताव पारित कर आंदोलन आरंभ करने का संकल्प व्यक्त किया ।

ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन (AJSU) 1986

- झारखंड मुक्ति मोर्चा ने बराबर यह महसूस किया कि छात्रो को भी झारखंड आंदोलन से जोड़ना चाहिए और उनकी ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए ।
- 22 जून 1986 को सूर्य सिंह बेसरा के नेतृत्व मे जमशेदपूर के सोनारी मे ऑल झारखंड स्टूडेंट्स यूनियन का गठन किया गया जो असम के ऑल असम स्टूडेंट यूनियन से प्रेरित था
- वर्तमान मे आजसू के अध्यक्ष सुदेश महतो है ।
- आजसू का लक्ष्य था पृथक झारखंड राज्य व शोषण मुक्त समाज की स्थापना

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

झारखंड समन्वय समिति (1987)

- रामगढ मे विभिन्न संगठनों का सम्मेलन आयोजित किया गया
- राष्ट्रीय दलों को छोड़कर 53 संगठनों ने सम्मेलन में भाग लिया और झारखंड समन्वय समिति का गठन किया ।
- डॉ. विशेस्वर प्रसाद केसरी को इसका संयोजक बनाया गया ।

- समिति ने राष्ट्रपति आर वेंकटरमन को 23 सुत्री मांग सौंपा जिसमें बिहार , बंगाल , उड़िसा व मध्य प्रदेश के 21 जिलों को मिलाकर पृथक राज्य की मांग भी शामिल थी ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

झारखंड विषयक समिति (1989)

- केंद्र , बिहार सरकार तथा झारखंडी नेताओं के बीच मे नई दिल्ली में गृहमंत्री बूटा सिंह की अध्यक्षता में त्रिपक्षीय वार्ता के पश्चात झारखंड विषयक समिति का गठन का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।
- गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव बीएस लाली को झारखंड विषयक समिति का संयोजक नियुक्त किया गया था ।
- समिति के तीन विशेषज्ञ डॉ कुमार सुदेश सिंह , डॉक्टर भूपेंद्र , और डॉ. केएन प्रसाद थे ।

- इस सिमित में केंन्द्र एवं राज्य सरकार के 9 अधिकारी और झारखंड आंदोलन से जुड़े संगठनों के 14 प्रतिनिधियों को शामिल किया गया था ।
- झारखंड विषयक समिति ने झारखंड क्षेत्र विकास परिषद के गठन की सिफासश की थी ।
- 1992 में बिहार के मुख्यमंत्री लालू यादव का कथन था झारखंड का निर्माण मेरी लाश पर से होगा ।

झारखंड क्षेत्र स्वशासी परिषद् (JAAC) 1995

- JHARKHAND AREA AUTONOMOUS COUNCIL
- इसका गठन 9 अगस्त 1995 को हुआ था ।
- बिहार सरकार एवं झारखंड के नेताओं के बीच कई दौर की वार्ता के पश्चात इसका गठन किया गया ।
- शिबू सोरेन को परिषद का अध्यक्ष व सूरज मंडल को उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया ।
- परिषद् के तहत बिहार के 18 जिलों को शामिल किया गया जिसे आदिवासियों के हाथ मे झुनझुना नाम दिया गया

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

झारखंड राज्य का गठन का अंतिम चरण

- 22 जुलाई 1997 ई. को बिहार विधानसभा द्वारा अलग झारखंड राज्य गठन हेतू संकल्प पारित कर उसे केंद्र सरकार को भेजा गया ।
- 1998 ई. में केन्द्र सकार ने बिहार विधानसभा द्वारा पारित संकल्प के आधार पर वनांचल राज्य से संबधित बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक तैयार कर स्वीकृति के लिए बिहार सरकार को भेजा जिसे बिहार विधानसभा ने नामंजूर कर दिया ।
- 25 अप्रैल 2000 ईस्वी को झारखंड निर्माण हेतू बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक 2000 को बिहार सरकार द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई
- 2 अगस्त 2000 ई. को लोकसभा मे पारित
- 11 अगस्त 2000 ई. को राज्यसभा से पारित
- 25 अगस्त को राष्ट्रपति के आर नारायणन द्वारा हस्ताक्षर
- अंततः 15 नवबंर 2000 ईस्वी को बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर झारखंड भारत का 28वें राज्य के रूप मे अस्तित्व में आया ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

झारखंड आंदोलन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- झारखंड का प्रथम छात्र संगठन बिरसा सेवा दल था जिसकी स्थापना 1965 ई. में ललित कुजूर ने की थी ।

- अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद की स्थापना 1968 ई. में कार्तिक उरांव के द्वारा किया गया था ।
- झारखंड गठन के समय भारत के राष्ट्रपति डॉ के आर नारायणन थे जबकि प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई थे ।
- झारखंड गठन के समय बिहार की मुख्यमंत्री श्रीमति राबड़ी देवी थी और बिहार के राज्यपाल वीसी पांडे थे ।
- झारखंड के प्रथम राज्यपाल प्रभात कुमार बने जो उतरप्रदेश के थे ।
- झारखंड मे पहली सरकार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन अर्थात एनडीए की बनी जिसमें प्रथम मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी को बनाया गया ।
- झारखंड विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष इंदर सिंह नामधारी बने

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

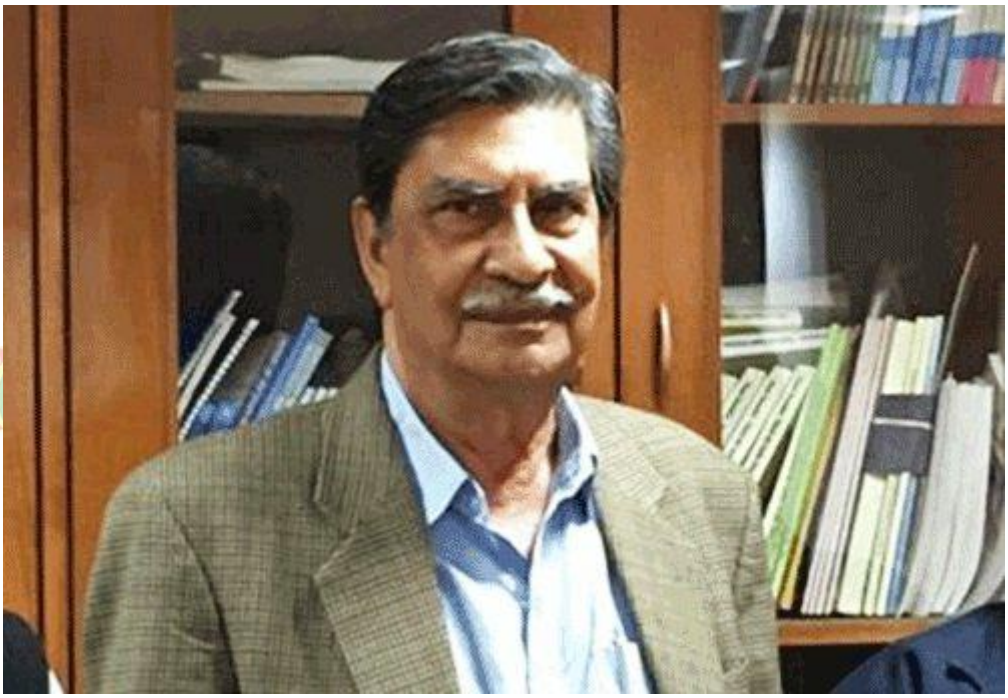

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888